इकाई 23 वैयक्तिक लेखन की भाषा

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य
23.1 प्रस्तावना
23.2 वैयक्तिक लेखन क्या है?
23.3 वैयक्तिक लेखन का सृजनात्मक पक्ष
23.4 वैयक्तिक लेखन की विभिन्न विधाएँ
  23.4.1 आत्मकथा
  23.4.2 संस्मरण
  23.4.3 डायरी
  23.4.4 यात्रा वृतांत
23.5 वैयक्तिक लेखन की भाषा
  23.5.1 आत्मकथा की भाषा
  23.5.2 संस्मरण की भाषा
  23.5.3 डायरी की भाषा
  23.5.4 यात्रा वृतांत की भाषा
23.6 सारांश

23.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- वैयक्तिक लेखन की भाषा से संबंधित इस इकाई में हम वैयक्तिक लेखन का अर्थ और उसके स्वरूप के बारे में जानकारी हासिल कर सकेंगे,
- वैयक्तिक लेखन का अन्य लेखन से अंतर स्पष्ट कर सकेंगे,
- वैयक्तिक लेखन के सर्जनात्मक पक्ष का अध्ययन करने के अलावा वैयक्तिक लेखन की विभिन्न विधाओं को बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- इसमें वैयक्तिक लेखन की भाषा और उसके महत्व के बारे में जान सकेंगे, और
- वैयक्तिक लेखन के शिल्प का भाषा पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसके बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

23.1 प्रस्तावना

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम-2 के अंतिम खंड की इस 23 इकाई में आप वैयक्तिक लेखन की भाषा का अध्ययन करेंगे। समकालीन गद्य-साहित्य में वैयक्तिक लेखन का महत्वपूर्ण स्थान है। यों तो इसकी शुरुआत भारतेंदु काल से ही हो गई थी लेकिन आजादी के बाद इसका तेजी से विकास हुआ है। हमारी सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का भी इस प्रकार के लेखन पर व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। व्यक्ति के जीवन में जैसे-जैसे बदलाव आते गए उसने अभिव्यक्ति के नए-नए तरीकों की खोज की। पूंजीवादी व्यवस्था और उद्योगीकरण के विकास से जहाँ एक ओर सामुदायिक भावना कम होती गई वहीं व्यक्तिवादी चेतना जोर पकड़ने लगी। ऐसे समय में व्यक्ति अकेलेपन का भी शिकार होने लगा है। दूसरे, मानवीय संबंधों में आई कमी के कारण व्यक्ति

या लेखक जीवन के किसी विशेष क्षण को अवश्य याद रखना चाहता है। ये क्षण उसके जीवन के यादगार क्षण होते हैं और लेखक उन्हें आत्मीयतापूर्वक अपने लेखन में उतार लेता है। यह उसके लिए एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी होता है और उसकी एक रचनात्मक कृति भी। वैयक्तिक लेखन द्वारा एक लेखक अपनी अनुभूतियों और विचारों में दूसरों को भी हिस्सेदार बनाता है और इस तरह उसके बिल्कुल निजी एवं अंतरंग भाव, विचार या अनुभव व्यापक पाठक समुदाय की चेतना का अंग बन जाते हैं।

आप इस इकाई में वैयक्तिक लेखन से संबंधित उन विधाओं का अध्ययन करेंगे जिनका साहित्य लेखन में भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस इकाई में हम आपको आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा वृतांत और डायरी लेखन के बारे में बतायेंगे और यह भी कि इन विभिन्न विधाओं की भाषा की क्या विशेषताएँ हैं और इनकी भाषागत विशेषताओं का शिल्प के साथ क्या संबंध है। व्यक्तिपरक लेखन में भाषा का स्वरूप समझने में आपको इस इकाई के अध्ययन से काफी मदद मिलेगी।

23.2 वैयक्तिक लेखन क्या है?

इस भाग में हम वैयक्तिक लेखन के बारे में विचार करेंगे। वैयक्तिक लेखन और निर्वैयक्तिक लेखन - ये लेखन के दो भेद हो सकते हैं। वैसे तो सभी तरह का लेखन वैयक्तिक लेखन ही होता है क्योंकि वह किसी न किसी व्यक्ति द्वारा लिखा जाता है। लेकिन यहाँ वैयक्तिक लेखन उस लेखन को कहेंगे जिसमें व्यक्ति अपने बारे में लिखता है। जबकि निर्वैयक्तिक लेखन वह होता है जो व्यक्ति-निरपेक्ष होता है, जिसमें लिखने वाला अपनो बारे में प्रायः कुछ नहीं बताता। वैयक्तिक लेखन के तात्पर्य पर ही हम अब विस्तार से विचार करेंगे।

वैयक्तिक लेखन का तात्पर्य

मनुष्य ने जब भाषा की खोज की होगी तब सबसे पहले उसने अपने मन के भावों को व्यक्त करने की आवश्यकता समझी होगी। अपनी अनुभूतियों को जब कोई व्यक्ति अपनी भाषा में व्यक्त करने की कोशिश करता है तो उसका यह प्रयत्न वैयक्तिक अभिव्यक्ति कहा जाएगा और जब वह उसे लिखता है तो उसे वैयक्तिक लेखन कहेंगे। इसके केंद्र में व्यक्ति स्वयं होता है जो न केवल लेखक होता है बल्कि उस अभिव्यक्ति का माध्यम भी होता है। इस तरह वैयक्तिक लेखन निजी लेखन होता है और इसमें निजी एवं अंतरंग अनुभूतियाँ, घटनाएँ और विचार केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। आदि कवि वाल्मीकि के मुँह से जब पहली बार कविता प्रस्फुटित हुई थी तो उसमें करुणाजनित क्रोध का भाव उमड़ रहा था, यह उनकी वैयक्तिक अनुभूति थी। क्योंकि यह कोई आवश्यक नहीं है कि एक विशेष घटना को देखकर अनेक व्यक्तियों के मन में एक ही तरह के भाव पैदा हों। कोई समूची घटना से निरपेक्ष या तटस्थ भी बना रह सकता है। इस प्रकार जब व्यक्ति किसी घटना या अनुभव विशेष को बाहरी हस्तक्षेप के बिना निजता, आत्मीयता और तन्मयता के साथ प्रस्तुत करता है तो उसे हम वैयक्तिक लेखन कह सकते हैं। वैयक्तिक लेखन में लेखक अपने को केंद्र में रखकर शेष जगत का अवलोकन करता है। वहाँ शेष जगत अनुपस्थित नहीं होता, लेकिन उसे हम लेखक की निजी अनुभूति के रूप में देखते हैं।

वैयक्तिक लेखन में लेखक और उसकी अनुभूति के बीच कोई दूसरा व्यक्त हस्तक्षेप नहीं करता। इसमें लेखक अपने अनुभव जगत को निर्बाध गति से व्यक्त करता चलता है जबकि दूसरी तरह के लेखन में लेखक को यह स्वतंत्रता नहीं रहती। इसे ठीक से समझने के लिए वैयक्तिक लेखन और अन्य लेखन के बीच का फ़र्क जान लेना बहुत जरूरी है। वैयक्तिक लेखन उसे कहेंगे जिसमें लेखक की हिस्सेदारी सीधे तौर पर दिखाई देती है। यात्रा-वृतांत, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, जीवनी, रिपोर्ताज आदि विधाएँ वैयक्तिक लेखन के अंतर्गत आएँगी जबकि कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं का स्वरूप इनसे भिन्न होता है। यहाँ लेखक और उसके वर्णन के बीच चरित्र भी आ जाते हैं जिनका अपना अलग व्यक्तित्व होता है और ये चरित्र लेखक को अपनी निजी अनुभूतियों को बेबाकी से अभिव्यक्त करने की इजाजत नहीं देते।

आत्मकथा, संस्मरण, डायरी, यात्रा-वृतांत आदि विधाएँ अगर वैयक्तिक विधा के अंतर्गत गिनी जाती हैं तो इसी अर्थ में कि इनमें व्यक्ति की निजता को व्यक्त करने की क्षमता कहीं ज्यादा होती है।

23.3 वैयक्तिक लेखन का सृजनात्मक पक्ष

वैयक्तिक लेखन, जिसमें आत्मकथा, जीवनी, यात्रा-वृतांत, संस्मरण और डायरी आदि विधाएँ शामिल हैं, में व्यक्ति के भोगे हुए क्षणों का वर्णन होता है। इसमें कल्पना की बजाय वस्तुस्थिति या सत्य घटना को चित्रित किया जाता है। लेकिन सच्चाई का वर्णन करते समय लेखक इस बात का विशेष ध्यान रखता है कि उसका लेखन केवल तथ्यात्मक न रह जाए। इसलिए वह इसमें अंतरंगता और रोचकता लाने के लिए भाषा-शैली के प्रति सचेत रहता है। कल्पना का प्रयोग वह उसी सीमा तक करता है जहाँ तक उसके तथ्यों को काई नुकसान नहीं पहुँचता। ऐसा करते समय लेखक भूगोल और इतिहास लेखन की शैली का सहारा न लेकर कथा की सरल, सहज एवं सरस शैली को अपनाता है। अपने वर्णन में वह पशु-पक्षी, नदी-पर्वत, जंगल-झाड़ और ऋतुओं की सुंदरता को भी स्थान देता है जो मनुष्य के मन को सहज आकृष्ट करने वाले प्राकृतिक उपादान माने जाते हैं। लोक-जीवन से सीधे जुड़ने के लिए लेखक प्रचलित मुहावरों, अलंकारों और मिथकों का भी सहारा लेता है। इस तरह वह लोक रुचि का विशेष ध्यान रखता है।

वैयक्तिक लेखन की एक महत्वपूर्ण विशेषता होती है - आत्मीयता। लेखक को किसी वस्तु, घटना या व्यक्ति का वर्णन करते समय यह ध्यान बराबर रखना पड़ता है कि पाठक वर्णित विषय के साथ अपना तादात्म्य या लगाव महसूस करे। कहने का तात्पर्य यह है कि इस तरह के लेखन में कोशिश यह की जाती है कि पाठक लेखक की अनुभूति का हिस्सेदार बने। ऐसा होने पर ही लेखन की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। वैयक्तिक लेखन में विचार की अपेक्षा भावों की अभिव्यक्ति पर विशेष बल दिया जाता है। इसमें लेखक का निजी अनुभव वस्तु, व्यक्ति या घटना के संदर्भ में सजीव हो उठता है और इसकी सार्थकता इसमें है कि यह अनुभव उसी तीव्रता के साथ पाठक के मन को भी प्रभावित करे।

वैयक्तिक लेखन अतीत का स्मृति चित्र होता है। इसमें लेखक का दृष्टिकोण वर्ण्य विषय की आंतरिक विशेषताओं को उद्घाटित करना होता है ताकि उस व्यक्ति या वस्तु का समूचा अस्तित्व जीवित हो उठे। इसलिए इस तरह के लेखन में भावना का तत्व मुख्य भूमिका निभाता है। महादेवी वर्मा ने 'अतीत के चलचित्र' में लिखा है -

'इन स्मृति-चित्रों में मेरा जीवन आ गया है। यह स्वाभाविक भी था। ... मेरे जीवन की परिधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसा परिचय दे जाते हैं वह बाहर रूपांतरित हो जाएगा।'

कहने का तात्पर्य यह है कि वैयक्तिक लेखन में वैयक्तिकता उसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता होती है जिसके बिना इस प्रकार का लेखन संभव नहीं हो सकता। यह वैयक्तिकता लेखक के जीवन की कोई ऐसी घटना हो सकती है जिसे वह भुला नहीं पाता। यह घटना-विशेष ही अपने आप में वैयक्तिकता को वर्णित करने का आधार बन जाती है।

बोध प्रश्न-1

1) निर्वैयक्तिक लेखन किसे कहते हैं?

.....

.....

2) निम्नलिखित में से वैयक्तिक लेखन के उदाहरण चुनिए :

(क) उपन्यास (ख) आत्मकथा (ग) वैज्ञानिक लेखन

(घ) डायरी

3) वैयक्तिक लेखन में कल्पना का प्रयोग किया जा सकता है या नहीं?

.....

.....

23.4 वैयक्तिक लेखन की विभिन्न विधाएँ

वैयक्तिक लेखन की विभिन्न विधाओं का उल्लेख हम कर चुके हैं लेकिन यहां हम उन्हीं विधाओं की विशेषताओं का अध्ययन करेंगे जिनमें आत्मकथात्मकता और वैयक्तिकता का अंश ज्यादा होता है। इस इकाई में हम डायरी, आत्मकथा, संस्मरण और यात्रा वृतांत की भाषागत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। ये विधाएँ ऐसी हैं जिन्हें सिर्फ साहित्यिक लेखन के अंतर्गत शामिल नहीं किया जा सकता। इन विधाओं का उपयोग वे लोग भी लेखन के लिए करते हैं, जो साहित्यकार नहीं होते। लेकिन इन विधाओं में लिखकर वे अपने अनुभव से समाज के अनुभव को समृद्ध करते हैं।

23.4.1 आत्मकथा

हिंदी में आत्मकथा विधा का विकास पश्चिम के प्रभाव के कारण हुआ। स्वयं द्वारा लिखी गई अपनी ही जीवनी आत्मकथा कहलाती है। दूसरे शब्दों में, जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है तब उसे आत्मकथा कहते हैं।

आत्मकथा में अतीत जीवन का चित्रण तो होता ही है, साथ ही उसके समूचे परिवेश की अभिव्यक्ति भी उसमें होती है। लेखक अपने भोगे हुए जीवन को आत्मकथा में पुनर्सर्जित करता है। आत्मकथा में वैयक्तिक जीवन का उल्लेख होता है। अधिकतर लेखक इसमें उन घटनाओं का चयन करते हैं जिनकी उनके जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आत्मकथा में अतीत और वर्तमान का गहरा संबंध व्यक्त होता है।

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह आत्मकथा भी लेखक की सर्जनात्मकता की प्रतीक होती है। आत्मकथा में कथा-रस की अनुभूति एक आवश्यक तत्व है। लेखक सच्चाई के प्रति ईमानदार रहता है और निष्पक्ष होकर अपने अतीत को एक वृहतकथा का रूप देता है जो न केवल साहित्यिक गुणों से भरपूर होती है बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा का काम भी करती है। इसमें विगत जीवन को अभिव्यक्त करते हुए लेखक को संयम और कौशल का अधिक ख्याल रखना पड़ता है। आत्मकथा में लेखक अपने जीवन-मूल्यों की व्याख्या भी करता है। इससे उसके व्यक्तित्व का पता चलता है। इस तरह आत्मकथा लेखक द्वारा अपने बारे में लिखा गया ऐसा कथानक है जो सत्य पर आधारित होता है और जिसमें लेखक का समूचा व्यक्तित्व झलक उठता है।

23.4.2 संस्मरण

'हिंदी साहित्य कोश' के अनुसार 'संस्मरण-लेखक जो स्वयं देखता है, जिसका वह स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ रहती हैं। स्मृति ही संस्मरण का रूप है।' किसी व्यक्ति, घटना, दृश्य, वस्तु को आत्मीयता के साथ याद करते हुए उसका विवेचन करना ही संस्मरण है। इसमें लेखक के अनुभव की प्रधानता होती है जो किसी घटना अथवा व्यक्ति से संबंधित होते हैं। संस्मरण में वर्णन और विवरण की अधिकता होती है। इसमें स्थितियों और व्यक्तियों को एक-एक चरण आगे-पीछे जोड़कर अंकित किया जाता है। स्मृति से जुड़ी अनुभूतियों और भाव-सम्पदा के आधार पर अभिव्यक्ति होती है। स्मृति की इस अभिव्यक्ति में आत्मीयता का रंग भी मिला होना जरुरी है। संस्मरण केवल अतीत की घटनाओं पर आधारित होता है। इसमें जिस व्यक्ति या घटना का वर्णन किया जाता है उससे लेखक का व्यक्तिगत संबंध होना अनिवार्य है। संस्मरण में भावुकता का अंश भी प्रमुख होता है। लेखक को अपने अनुभवों और प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने की पूरी आजादी रहती है। वैयक्तिकता संस्मरण की महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। इसमें सम्पूर्ण जीवन का चित्रण न करके कुछ घटनाओं का विवेचन होता है। जीवन के ऐसे पक्षों और प्रसंगों की झाँकी इसमें पेश की जाती है जिनके प्रति पाठक के मन में जिज्ञासा का भाव उत्पन्न हो सके। वैसे भी अंतरंग प्रसंगों को जानने की इच्छा आमतौर से लोगों में पाई जाती है। संवेदनशील लेखक सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति और घटनाओं के महत्वपूर्ण रूप को स्मृति पटल में एकत्र एवं अंकित करता रहता है और जब वह लिखने बैठता है तो चित्र सहज ही बनते चले जाते हैं।

24.4.3 डायरी

'डायरा' शब्द हिंदी में अंग्रेजी से आया है और इस शब्द के साथ उसकी पूरी अवधारणा भी पश्चिम से ही ग्रहण की गई है। हिंदी में इसके लिए दैनिकी, दैनन्दिनी, वासुरी, वासरिका आदि शब्दों का प्रयोग होता है। डायरी से रोज

लिखे जाने वाले तथ्यों, घटनाओं और कार्यों का पता चलता है। जब कोई व्यक्ति दिन, तिथि, सन् के आधार पर जीवन में घटित अथवा देखी गई धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक या साहित्यिक परिस्थितियों का चित्रण करता है तो वह रचना डायरी के नाम से जानी जाती है। डायरी लेखक के निजी अनुभव का अभिन्न अंग होती है। अपने निजी कार्यों, विचारों और भावों की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति होने के कारण यह विधा अन्य साहित्यिक विधाओं से अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक मानी जाती है। डायरी निजी होती है। लेखक इसे प्रकाशित कराने के उद्देश्य से नहीं लिखता। इसमें तो भावनाओं और अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति होती है जिससे लेखक की निजता उद्घाटित हो जाती है। कलात्मकता का इस विधा में अधिक महत्व नहीं होता ऐसा डायरी की स्वाभाविकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। विविधता इस विधा की प्रमुख विशेषता है। विषयवस्तु और मनःस्थिति के अनुसार इसमें प्रयुक्त शैली का स्वरूप भी बदलता रहता है। प्रतिदिन डायरी लिखना इसकी अनिवार्य शर्त नहीं है अर्थात् डायरी लेखन में दिन, सप्ताह और महीनों का अंतराल हो सकता है। इसलिए इसमें पूर्वा पर संबंध जोड़ना उचित नहीं होगा। इस तरह डायरी लेखन का संबंध सिर्फ़ लेखक से होता है जिसमें वह अपनी भावनाओं, विचारों और घटनाओं को सहज रूप में प्रस्तुत कर देता है।

23.4.4 यात्रा-वृतांत

व्यक्ति जब अपने द्वारा की गई यात्रा के अनुभवों को कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है, तो उसे यात्रा-वृतांत कहते हैं। इसमें कल्पना की गुंजाइश नहीं होती और बीते हुए यथार्थ की प्रधानता पाई जाती है। यात्रा में स्थान बदलने की क्रिया महत्वपूर्ण होती है। यात्रा के अनेक कारण हो सकते हैं। जीविकोपार्जन, ज्ञानार्जन और प्रकृति की रमणीयता व्यक्ति को यात्रा के लिए अक्सर प्रेरित करती है। सौंदय-भावना के विकास ने मनुष्य में प्रकृति के प्रति आकर्षण पैदा किया, जिससे खिंचकर वह दुर्गम प्रदेशों की यात्रा करने का साहस जुटा सका। जीवन के बदलते हुए स्वरूप ने भी यात्रा को बढ़ावा दिया। सांस्कृतिक आदान-प्रदान, राजनीतिक सम्पर्क और शिक्षा-प्राप्ति के लिए मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा।

यात्रा-वृतांत में स्थान और तथ्यों का विशेष महत्व होता है। आत्मीयता, वैयक्तिकता, रोचकता और कल्पनाशीलता जैसे दूसरे तत्व इस विधा की विशेषता है पर इनका स्वरूप दूसरी विधाओं की तुलना में थोड़ा अलग होता है। यात्रा वृतांत के लिए यह जरूरी है कि वह प्रचारात्मक पुस्तक न प्रतीत हो, न ही पर्यटन गाइड। उसका साहित्यिक रूप बरकरार रहना चाहिए। इसमें मिथक, प्रतीक, अलंकार, मुहावरों और लोकोक्तियों का सहारा लिया जा सकता है। चित्रात्मक वर्णन इस विधा की एक प्रमुख विशेषता है। यात्रा-वृतांत में विवेचन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इसकी स्वाभाविकता बनी रहे। संवेदनशीलता ही इस विधा को साहित्यिक कृति का रूप देती है। यात्रा-वृतांत सामान्य वर्णनात्मक शैली के अलावा डायरी, पत्र और रिपोर्ताज शैली में भी लिखे जाते हैं। इसलिए इनमें निबंध, कथा, संस्मरण आदि कई गद्य-रूपों का एक साथ आनंद मिलता है।

बोध प्रश्न-2

1) जीवनी और आत्मकथा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

2) यात्रा वृतांत लिखने के कारणों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

3) डायरी और संस्मरण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

23.5 वैयक्तिक लेखन की भाषा

वैयक्तिक लेखन की प्रमुख विधाओं पर हम विचार कर चुके हैं। अब हम इसकी भाषागत विशेषताओं पर चर्चा करेंगे। वैयक्तिक लेखन की भाषा निर्वैयक्तिक लेखन से कुछ भिन्न होती है। निर्वैयक्तिक लेखन में वस्तुपरकता, विषय की विवेचना और लेखकीय तटस्थता का अधिक महत्व होता है। इसलिए भाषा में भी आत्मीयता और निजता का स्पर्श उस हद तक नहीं होता, जितना कि वैयक्तिक लेखन में होता है। वैयक्तिक लेखन की भाषा में लेखक खुद मौजूद रहता है इसलिए उसमें भाषिक विविधता और कल्पनाशीलता उतनी नहीं होती, जितनी कि गहनता और संवेदनशीलता।

वैयक्तिक लेखन की उपुर्यक्त विधाओं की भाषा में भी फर्क होता है। आत्मकथा, संस्मरण, डायरी और यात्रा, वृत्तांत में भाषा का स्वरूप किस तरह का होता है, इ.ार हम उदाहरणों द्वारा विचार करेंगे।

23.5.1 आत्मकथा की भाषा

स्वयं लिखी अपनी जीवनी आत्मकथा कहलाती है। इसमें लेखक अपने अतीत को पुनर्सृजित करता है। यह साहित्य की एक सरस और संस्मरणात्मक विधा है। आत्मकथा में लेखक के जीवन का श्रृंखलाबद्ध विवरण होता है जिसमें वह अपने विशाल जीवन-सामग्री में से कुछ महत्वपूर्ण बातों को लेकर उनको व्यवस्थित ढंग से सामने रखता है इसलिए आत्मकथा की भाषा विवरणात्मक होती है। यहाँ आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की आत्मकथा से कुछ अंश प्रस्तुत किए जा रहे हैं -

> 'मैं एक ऐसे देहाती का 'एकमात्र आत्मज हूँ जिसका मासिक वेतन सिर्फ़ दस रुपया था। अपने गाँव के देहाती मदरसे में थोड़ी-सी उर्दू और घर पर थोड़ी-सी संस्कृत पढ़कर तेरह वर्ष की उम्र में मैं 36 मील दूर रायबरेली के जिला-स्कूल में अंग्रेज़ी पढ़ने गया। आटा-दाल घर से पीठ पर लादकर ले जाता था। दो आना महीना फीस देता था। दाल ही में आटा के पेड़े या टिकिया पकाकर पेट-पूजा करता था। रोटी बनाना तब मुझे आता ही नहीं था। एक वर्ष किसी तरह वहाँ काटा। फिर पुरवा, फतेहपुर और उन्नाव के स्कूलों में चार वर्ष काटे। कौटुम्बिक दुरवस्था के कारण मैं उससे आगे न बढ़ सका। मेरी स्कूली शिक्षा भी वहीं समाप्त हो गई।'

आत्मकथा वैयक्तिक जीवन पर आधारित होती है। इसमें वह अपने जीवन और परिवेश के अनेक मार्मिक क्षणों और अनुभवों को अभिव्यक्त करता है।

'नौकरी छोड़ने पर मेरे मित्रों ने कई प्रकार से मेरी सहायता करने की इच्छा प्रकट की। किसी ने कहा - आओ, मैं तुम्हें अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बनाऊँगा। किसी ने लिखा - मैं तुम्हारे साथ बैठकर संस्कृत पढ़ूँगा। किसी ने कहा - मैं तुम्हारे लिए एक छापाखाना खुलवा दूँगा इत्यादि। पर मैंने सबको अपनी कृतज्ञता की सूचना दे दी और लिख दिया कि अभी मुझे आपकी सहायता की विशेष आवश्यकता नहीं।'

आत्मकथा में अतीत और वर्तमान का गहरा संबंध होता है। आत्मकथा लेखक के लिए अपने चरित्र का उद्‌घाटन और विश्लेषण करना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इसमें भाषा जहाँ एक ओर वर्णनात्मक होती है तो दूसरी ओर उसका स्वरूप विश्लेषण प्रधान होता है।

'नहीं कह सकता, शिक्षा-प्राप्ति की तरफ प्रवृत्त होने का संस्कार मुझे किससे मिला - पिता से या पितामह से या अपने ही किसी पूर्वजन्म के कृत कर्म से। बचपन से ही मेरा अनुराग तुलसीदास की 'रामायण' और ब्रजवासीदास के 'ब्रज-विलास' पर हो गया था। फुटकर कवित्त भी मैंने सैकड़ों कंठस्थ कर लिए थे। हुशंगाबाद में रहते समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'कवि वचन सुधा' और गोस्वामी राधाचरण के एक मासिक-पत्र ने मेरे उस अनुराग की वृद्धि कर दी। वहीं मैंने बाबू हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ नाम के एक सज्जन से, जो वहाँ कचहरी में मुलाजिम थे, पिंगल का पाठ पढ़ा। फिर क्या था, मैं अपने को कवि ही नहीं महाकवि समझने लगा। मेरा यह रोग बहुत समय तक ज्यों का त्यों बना रहा। झाँसी आने पर जब मैंने पंडितों की कृपा से प्रकृत कवियों के काव्यों का अनुशीलन किया तब मुझे अपनी भूल मालूम हो गई और छंदोबद्ध प्रलापों के जाल से मैंने सदा के लिए छुट्टी ले ली। पर गद्य में कुछ न कुछ लिखना जारी रखा। संस्कृत और अंग्रेज़ी पुस्तकों के कुछ अनुवाद भी मैंने किए।'

आत्मकथा में लेखक कहीं-कहीं हास्य-व्यंग्य की शैली का प्रयोग करता है जिससे भाषा में रोचकता पैदा हो जाती है।

'कवि तो मैं था ही, मैंने चार-चार चरण वाले लंबे छंदों में एक पद्यात्मक पुस्तक लिख डाली। ऐसी पुस्तक जिसके प्रत्येक पद्य से रस की नदी नहीं तो बरसाती नाला जरूर बह रहा था।'

लेखक कभी-कभी भावपूर्ण क्षणों में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग भी करने लगता है।

'फिर क्या था, उसके शरीर में कराल काली का आवेश हो गया। उसने मुझपर वचन-विन्यास रूपी इतने कड़े कशाघात किए कि मैं तिलमिला उठा।'

साहित्य की अन्य विधाओं के समान आत्मकथा भी एक सर्जनात्मक विधा है। बल्कि यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इसमें कथा तत्व भी भरपूर मात्रा में विद्यमान होता है।

23.5.2 संस्मरण की भाषा

संस्मरण में जीवन के किसी महत्वपूर्ण भाग या घटना का संदर्भ होता है। इसके संबंध में कहा जाता है कि जिस प्रकार जीवनी कोई दूसरा आदमी

लिखता है, आत्मकथा स्वयं लिखी जाती है वैसे संस्मरण कोई भी लिख सकता है बशर्ते उसके जीवन में कोई ऐसा क्षण घटित हुआ हो जिसका साहित्यिक-सामाजिक संदर्भ में कोई मूल्य हो अथवा जिसमें कोई दृष्टि छिपी हो। यहाँ रामनारायण उपाध्याय द्वारा लिखित 'चतुर्मुखी प्रतिभा के धनी माखनलाल चतुर्वेदी' शीर्षक संस्मरण का उल्लेख किया जा रहा है।

> 'वे 'दादा' जैसे पारिवारिक नाम से समूचे हिन्दी जगत में परिचित रहे। उनका यह नाम महज एक सम्बोधन नहीं वरन् इसमें उनका संपूर्ण व्यक्तित्व समाया है। वे हिंदी के कवि, कहानीकार, निबंधकार और पत्रकार रहे, लेकिन इन सबसे पूर्व वे एक सहृदय मनुष्य थे। उनका घर सदा और सब समय के लिए खुला रहता।'

यहाँ लेखक ने माखनलाल चतुर्वेदी के सहृदय व्यक्तित्व का बहुत सरल भाषा में वर्णन किया है। इस संस्मरण में चतुर्वेदी जी के सहज स्वभाव को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

> 'वे उन लोगों में नहीं थे जो बिना पढ़े विषय पर बोलने का अपने को अधिकारी मानते हैं, वरन् उन्हें तो पढ़ने की ऐसी बीमारी रही कि जब उनकी आँखें साथ नहीं देती थीं तो किसी से पढ़वाकर नई रचनाएँ, सुनते और उसपर अपना मत देते थे। किसी की भी अच्छी रचना की दाद देना उनका स्वभाव थ। मैंने उनके मुँह से अनेक नए-पुराने लेखकों की अच्छी रचनाओं की प्रशंसा सुनी है।'

इस संस्मरण में लेखक ने वर्णनात्मक भाषा के प्रयोग द्वारा चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों को उभारने की कोशिश की है। आम तौर पर संस्मरणों में जिस व्यक्ति के बारे में वर्णन किया जाता है उससे संबंधित घटनाओं, विशेषताओं आदि को रेखांकित किया जाता है। एक अंश उद्धृत है -

> 'हिंदी का सदा मजाक उड़ाने वाले और अंग्रेज़ी के प्रबल समर्थक लार्ड सच्चिदानंद सिन्हा ने जब सन् 35 में पटना में दादा का भाषण सुना तो उन्होंने उनके सम्मान में एक भोज दिया था और उसमें कहा था कि माखनलाल जी जो बोलते हैं यदि वही हिंदी है तो मैं हिंदी का प्रबल समर्थक हूँ।'

संस्मरण प्रायः प्रसिद्ध व्यक्तियों पर ही लिखे जाते हैं और लिखने वाला भी ख्याति-प्राप्त व्यक्ति ही होता है। यह मानना उचित नहीं है। संस्मरण अत्यंत सामान्य व्यक्ति के बारे में भी लिखा जा सकता है, लेकिन ऐसे व्यक्ति के जीवन का वह पक्ष उजागर करना होता है जो महत्वपूर्ण और प्रेरक हो। इसमें आत्मीयता और गंभीरता के साथ किसी व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं को स्मरण किया जाता है।

> 'मैंने उनके भाषण सुने हैं। वे जब बोलते तब ऐसा लगता मानो उपमाओं और अलंकारों की झड़ी लग गई और जैसे नदी अपने प्रवाह के साथ बड़े-बड़े पाषाण-खण्डों को बहा लेने की क्षमता रखती है वैसे उनके भाषण में शब्दों की शिलाएँ पिघलने लगतीं। उनका हर वाक्य काव्य बनकर उतरता और हर शब्द का ताज बनता बिगड़ता, उन्हें यदि जादूगर कहें तो भी अत्युक्ति नहीं।'

यहाँ हम देखते हैं कि लेखक माखनलाल चतुर्वेदी की वक्तृता और आलंकारिक शैली का वर्णन करते हुए स्वयं भी आलंकारिक भाषा का प्रयोग करने लगता

है। पर इस तरह के वर्णन में इस बात का ध्यान रखना जरूरी होता है कि लेखक, जिसका स्मरण कर रहा है, उसकी प्रशंसा में ही न डूब जाए। इसलिए यह आवश्यक है कि आत्मनिष्ठता के साथ-साथ वस्तुनिष्ठता का भी एक सीमा तक ख्याल रखा जाए वरना उसका लेखन संस्मरण न होकर प्रशंसा-पत्र बन जाएगा।

> 'मैंने उनका पहला भाषण स्थानीय बाम्बे बाजार स्कूल में, जिसका नाम अब माखनलाल चतुर्वेदी शाला रख दिया गया है, सुना था। इसी स्कूल में दादा पहले अध्यापन-कार्य कर चुके हैं, इसीलिए आपको उक्त शाला में बोलने के लिए बुलाया गया तब आपने कहा था - 'नदी को अपने उद्गम की जगह दो पाँवों की दूरी से लाँघा जा सकता है, आगे चलकर तो उसमें बड़े-बड़े जहाज़ चलते हैं और उसकी गहराई की थाह नहीं पाई जाती, लेकिन जिसे दो नन्हें पावों से लाँघा जा सके, मैं तो अंत तक उस उद्गम का जल बना रहना चाहता हूँ।'

लेखक ने चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की विनम्रता को रेखांकित करने के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें उनका समूचा व्यक्तित्व ही उभरकर पाठक के सामने आ जाता है। वैसे भी संस्मरण-लेखक को चित्रित व्यक्ति के चरित्र के साथ बंधकर रहना पड़ता है और इसमें भावों और विचारों की बजाय घटना-क्रम के वर्णन पर बल रहता है। इसलिए भाषा भी आत्मनिष्ठ हो जाती है।

> 'दादा के मुक्त हास्य को मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा। खुलकर वही हँस सकता है जिसका मन निर्मल हो। वे प्रेमचंद की सफलता का रहस्य भी उनके हास्य में मानते थे। उन्होंने उनसे अपनी पहली मुलाकात का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि जब मैंने पहली बार काशी में सरस्वती प्रेस में उन्हें देखा, एक बड़ी मूछों वाला सदा हँसमुख ग्रामीण के रूप में देखा। कुर्ते के भीतर से बनियान झाँक रही थी। सादी धोती पहने हुए थे। उनकी बातों में मुक्त-हास्य था जो इस बात का पता देता था कि अपने घर पर किए जाने वाले व्यंग्य पर भी इस आदमी में दृढ़ता है कि वह हँस सके।'

संस्मरण की भाषा विवरणात्मक होती है और चित्रित व्यक्ति के प्रति लेखक के मन में श्रद्धा और आत्मीयता का भाव होता है। हालांकि वर्णित स्मृतियाँ मार्मिक और तथ्यपरक होती हैं और चित्रित व्यक्ति के साथ बिताए गए क्षणों पर आधारित होती हैं इसलिए संस्मरण में वर्णित व्यक्ति की छाप भी मौजूद रहती है। इसके अलावा, संस्मरण में निजी जीवन की घटनाओं के प्रत्यक्षीकरण की इस प्रक्रिया में लेखक स्वयं एक प्रमुख पात्र रहता है हालांकि वह पृष्ठभूमि में ही होता है।

> 'संयोग की बात है कि मैं स्टेशन घूमने गया तो ट्रेन से भारती भाई उतरते दिखे। मैंने कहा, 'अरे आप।' बोले, 'मैं धर्मयुग का सम्पादक होकर बम्बई जा रहा हूँ। सोचा रास्ते में दादा को भी प्रणाम करता चलूँ।' जब वे दादा से मिले तब उन्होंने उतरते ही रट लगाई - दादा बड़े जोर से भूख लगी है, कुछ मँगवाइए। और दादा कुछ मँगवाएँ, इसके पूर्व ही वे अपने टिफिन से निकालकर पूरियाँ खाने लगे। बोले - इच्छा तो रेल में ही खाने की थी लेकिन रास्ते में एक सज्जन मिल गए और जब वे खाना खाने बैठे तो उन्होंने पूछा आप भी जीमेंगे और मुझे उनके इस जीमेंगे शब्द से ऐसी नफरत हुई कि फिर मैंने खाना नहीं खाया।'

इस तरह हम कह सकते हैं कि संस्मरण ऐसी गद्य विधा है जिसमें लेखक विशिष्ट या सामान्य व्यक्ति के जीवन से जुड़ी मार्मिक एवं आत्मीय स्मृतियों को रोचक तथा तथ्यपरक ढंग से वर्णित करता है। इस वर्णन में लेखक की अंतरंगता स्पष्ट झलकती है। साथ ही वह बहुत ही सहज एवं सरल भाषा का इस्तेमाल करता है ताकि उसका वर्णन अधिक से अधिक लोगों तक संप्रेषित हो सके।

23.5.3 डायरी की भाषा

डायरी में जहाँ एक ओर लेखक के अपने जीवन-प्रसंगों का वर्णन होता है वहीं, दूसरी ओर उसमें तद्युगीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों का भी अंकन होता है। विशेष निजीपन के चलते यह विधा निबंध के समीप दिखाई देती है। यहाँ धर्मवीर भारती की डायरी से कुछ अंश उद्धृत करके हम डायरी की भाषा को समझने का प्रयत्न करेंगे। डायरी व्यक्ति के दैनिक कार्यकलापों, विचारों और विविध प्रसंगों या घटनाओं पर लेखक की टिप्पणी है। उदाहरण के लिए -

> 'हिंदी समीक्षा के क्षेत्र में इधर जबसे 'गतिरोध' शब्द का फैशन उठ गया है तब से एक दूसरा शब्द अकसर सुनाई देने लगा है - अनास्था।' किसी से मिलिए, कोई समीक्षा पढ़िए - अमुक चीज लिखी गई है - उसमें बल है, पर भाई बड़ी अनास्था है उसमें? थोड़ी-सी आस्था भी होती।' पहले तो केवल कविता के सिलसिले में यह शब्द सुनाई पड़ा था, इधर कहानियों के सिलसिले में भी सुनाई पड़ने लगा है। मैं नहीं जानता कि हिंदी का समीक्षा-साहित्य शब्दों की दिशा में इतना विपन्न है या और कोई कारण है ज्यों ही एक नया शब्द सुन पड़ा कि समीक्षक बड़े उत्साह से उसे सही गलत हर जगह चस्पा करने लगता है। कभी समझ-बूझकर, कभी नए शब्दाविष्कार के उत्साह में और कभी-कभी शुद्ध भावावेश में। यही भाग्य इस बेचारी अनास्था के साथ रहा है।'

लेखक इसमें एक समय-विशेष की मानसिक स्थिति, विचारधारा, अनुभूतियों आदि का सहज और यथार्थ चित्र उपस्थित करता है।

> 'पास के चौराहे पर नीम के नीचे दरी बिछाकर एक बहेलिया चंदन-टीका लगाकर, विप्र-वेश धारण कर बैठता है। बगल में एक पिंजड़े में एक पक्षी सामने कुछ बंद लिफाफों की ढेरियाँ। एक इकन्नी देने पर पिंजड़ा खुलता है, पक्षी बाहर निकलता है, ढेर में से एक लिफाफा चुनकर देता है। उसमें ग्राहक का भाग्य लिखा है - मुकदमे में आपकी जीत होगी। वो आपको मिलेगी, विश्वास रखो। यात्रा पर जाएँगे। तीर्थयात्रियों की भीड़ लगी है, सब आस्था में विभोर और विस्मय से स्तब्ध हैं।'

यहाँ लेखक की भाषा में व्यंग्य का तेवर विद्यमान है। ऐसा वह सच्चाई को उजागर करने के लिए भी करता है। इसके साथ ही इसमें लेखक के भावों, विचारों और अनुभूतियों की भी झलक मिलती है।

> 'अतः यह कथन कि अनास्थापूर्ण कृतियों में जो नकारात्मकता या ध्वंसात्मकता है इसीलिए वे अनुपयोगी हैं, नितांत भ्रमात्मक साबित होता है। सत्य कम से कम आज के प्रसंग में इसके बिल्कुल विपरीत ही सिद्ध होता है। पर एक समस्या यहाँ पर उठायी जा सकती है और मैं

समझता हूँ अनास्था के प्रसंग में वही एकमात्र प्रश्न है जो संगत है, जो विचारणीय है। यह जो पुराने, झूठे पड़े हुए प्रतिमानों, परिवेशों, व्यवस्थाओं के प्रति नकारात्मकता है, जो ध्वंसात्मकता है, वह अपने में ही स्वतः सिद्ध तो नहीं है। आखिरकार लेखक किसी नवीन, अधिक प्राणवान प्रतिमान, परिवेश या व्यवस्था की प्रतिष्ठा के लिए ही तो यह ध्वंस करता है। वह प्रक्रिया भी सोद्देश्य होनी चाहिए।'

कहना न होगा कि ध्वंस की प्रक्रिया का सोद्देश्य होना तो जरूरी है ही, साथ ही डायरी लेखक का वर्णन भी सार्थक और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। इसलिए इसमें सच्चाई और साफगोई भी एक आवश्यक तत्व होता है। इस प्रक्रिया में लेखक भाषा के श्रृंगार पर ध्यान देकर उसे केवल अपने विचारों के वाहक के रूप में इस्तेमाल करता है। पर ऐसा भी नहीं है कि लेखक की भाषा अनगढ़ और ऊबाऊ हो। दरअसल डायरी लेखक हमेशा एक ही मनःस्थिति में नहीं रहता, इसलिए मनःस्थितियों, विषय की विभिन्नता और मानसिकता में बदलाव के कारण भाषा शैली का रूप भी बदलता रहता है। 'अनास्था' शीर्षक लिखी डायरी के जो अंश यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं, वे निबंध शैली के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

'मनुष्य प्रेम ऐसी कृतियों में कितने जटिल भाव-स्तर पर छिपा है इसका एक बड़ा सूक्ष्म विवेचन मोपाँसा की एक कहानी में मैंने एक बार पढ़ा था।

x x x

वह अपनी कर्कशा पत्नी से न केवल ऊब गया है वरन् घृणा करने लग गया है। इतना कटु हो गया है कि वह दिन-रात यह सोचता है कि काश एक बार, सिर्फ़ एक बार उसका फेंका हुआ छुरा पत्नी के गले में या छाती में धंस जाए।

x x x

वह रोकर स्वीकार करता है कि पिछले पाँच साल से प्रतिदिन यह होता है, पर पता नहीं या तो वह प्रेम अब भी जीवित है या तीस वर्ष से रोज बच-बचाकर छुरा फेंकने से उसके हाथ इस तरह अभ्यस्त हो गए हैं कि वह अपनी ही कला के सामने पराजित है।'

डायरी में लेखक का ध्यान शिल्प पर उतना नहीं होता जितना भावों और विचारों पर। इसलिए डायरी लेखन में स्वाभाविकता का ज्यादा महत्व होता है। इसमें लेखक को किसी तरह के लोभ-लालच में नहीं फँसना पड़ता क्योंकि इसका उद्देश्य प्रकाशन नहीं होता। डायरी पूरी तरह से एक निजी विधा है इसलिए इसमें लेखक को अपने भावों-विचारों को व्यक्त करने की खुली छूट होती है। यही कारण है कि डायरी की भाषा में निजता का पुट अधिक होता है और उसकी शैली भावात्मक होती है।

23.5.4 यात्रा-वृत्तांत की भाषा

यात्रा-वृत्तांत में स्थान बदलने की क्रिया महत्वपूर्ण होती है। इसमें चलते रहने का क्रम निरंतर बना रहता है लेकिन साथ ही इसमें एक उद्देश्य भी निहित होता है। हिंदी आलोचक डॉ.नगेन्द्र ने सन 1967 में मास्को की यात्रा की थी। मास्को को देखकर उन्हें जो अहसास हुआ, उसे उन्होंने इन शब्दों में लिखा है -

'मास्को के इस विराट् परिदृश्य को देखकर यह लगता था कि जैसे मेरे अपने व्यक्तित्व का विस्तार हो रहा है - यह अनुभव कुछ ऐसा ही था, जैसा कि हिमालय या समुद्र के अनंत प्रसार को देखकर होता है। केवल एक ही भेद था - प्रकृति के ऐश्वर्य के माध्यम से जहाँ परोक्ष सत्ता के विराट् रूप का आभास होता है, वहाँ इस नगर के वैभव को देखकर मानव के असीम गौरव का प्रभाव मन पर पड़ता है।'

उपर्युक्त अंश में हम देखते हैं कि लेखक की भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी प्रवाहपूर्ण बन पड़ी है। दरअसल, लेखक जब दार्शनिक मुद्रा अपनाता है तो प्रायः उसकी भाषा में तत्सम शब्दावली का प्रयोग बढ़ जाता है। वहीं जब वह उस शहर (मास्को) के बारें में लिखता है तो उसकी भाषा अपने आप सरल हो जाती है -

'मास्को का रूसी नाम मस्क्वा है। सोवियत-संघ का सबसे बड़ा शहर है और विश्व में इसका स्थान पाँचवाँ या छठा है। इसका नामकरण मस्क्वा नदी के नाम पर हुआ है जो अब शहर के बीच में होकर बहती है। आबादी करीब पैंसठ लाख है और इतिहास लगभग आठ सौ वर्ष पुराना।'

यात्रा-वृत्तांत में आत्मीयता का होना आवश्यक है। इससे लेखक की अनुभूति भी अभिव्यक्त हो उठती है और भावना के प्रवाह में वह परिष्कृत भाषा का प्रयोग करने लगता है। मास्को यात्रा के दौरान डॉ.नगेन्द्र ने रूसियों के आतिथ्य से प्रभावित होकर बहुत ही आत्मीय शैली में लिखा है कि -

'इस उत्सव में पूर्ण व्यवस्था और सद्भावना का वातावरण था। आतिथेय वर्ग की ओर से प्रस्तुत स्वागत-कार्यक्रम में - उनके भाषणों और वक्तव्यों में - भारत के प्रति हार्दिक सौहार्द की अभिव्यंजना थी, उनके वचन और व्यवहार से यह स्पष्ट था कि वे हृदय से भारत की सुख-शांति के अभिलाषी हैं।'

यहाँ लेखक ने जिस भाषा का प्रयोग किया है उसमें रूसियों के प्रति उनकी प्रशंसा का स्वर भी सुनाई पड़ता है। भाषा से हमारा अभिप्राय सिर्फ़ शब्दों के प्रयोग से नहीं वरन् उन शब्दों में निहित भावों से भी होता है। उदाहरण के लिए एक अंश प्रस्तुत है -

'चित्र की माध्यम-भाषा रूसी थी, अतः हमारी मेजबान श्रीमती येरशोवा बीच की कुर्सी पर बैठी हुई साथ-साथ अंग्रेज़ी रूपांतर करती चलती थीं। श्रीमती येरशोवा का अंतर्ग्राह्य व्यक्तित्व अत्यंत मधुर था - उनकी रूपाकृति तथा वाणी व्यवहार में एक सहज मार्दव था जिसका मन पर बड़ा सुखद प्रभाव पड़ता था।'

कहने की आवश्यकता नहीं कि उपर्युक्त अंश में लेखक ने जिस भाषा में अपने अनुभव की अभिव्यक्ति की है उससे रुसियों की सहृदयता, भारत के प्रति मैत्री भाव और स्वयं लेखक की सौंदर्य दृष्टि स्पष्ट हो जाती है। रोचकता यात्रा-वृत्तांत की भाषा का अनिवार्य गुण है। यह पाठक में रुचि पैदा करता है और पढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

'परिवार की संस्था में रुसवासियों का विश्वास अब भी बना हुआ है। माता-पिता, भाई-बहिन आदि के रक्त-संबंधों की रक्षा वे पूरी कर्तव्य-भावना के साथ करते हैं। दाम्पत्य जीवन वहाँ का बहत सखी है, स्त्री

और पुरुष दोनों ही प्रायः काम करते हैं, परंतु आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर होने पर भी वे वैवाहिक सदाचार में निष्ठा रखते हैं।'

बोध प्रश्न-3

1) सही कथन के आगे सही का निशान (√) और गलत कथन के आगे गलत का निशान (x) लगाइए :

   क) आत्मकथा की भाषा विवरणात्मक होती है। ( )

   ख) संस्मरण प्रसिद्ध व्यक्तियों पर ही लिखे जाने चाहिए। ( )

   ग) डायरी की भाषा में सच्चाई और साफगोई झलकनी चाहिए। ( )

   घ) यात्रा वृत्तांत की भाषा में रोचकता और सहजता आवश्यक है। ( )

2) आत्मकथा, संस्मरण, डायरी और यात्रा वृत्तांत में कौन-सी बात सभी में पाई जाती है?

   .....

   .....

3) डायरी प्रकाशन के उद्देश्य से नहीं लिखी जाती। इस तथ्य का उसकी भाषा पर क्या असर पड़ता है?

   .....

   .....

अभ्यास

1) आत्मकथा और संस्मरण की भाषागत विशेषताओं का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

2) डायरी विधा का महत्व बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि उसकी भाषा कैसी होनी चाहिए।

3) यात्रा वृत्तांत किन-किन शैलियों में लिखा जा सकता है?

4) वैयक्तिक लेखन से क्या तात्पर्य है और उसकी प्रमुख विधाओं का वर्णन कीजिए।

5) किसी पठित आत्मकथा या यात्रा-वृत्तांत की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

23.6 सारांश

इस इकाई में हमने वैयक्तिक लेखन की भाषा का अध्ययन किया। वैयक्तिक लेखन वह लेखन है जिसमें लेखक अपनी भावनाओं, अनुभूतियों, घटनाओं का वर्णन करता है। वह अपने जीवन के बारे में बताता है तो उसे आत्मकथा कहा जाता है। किसी व्यक्ति, जिसके संपर्क में वह आया है, से संबंधित बातों का वर्णन करता है तो उसे संस्मरण कहते हैं। संस्मरण में स्मृति की प्रधानता होती है। यदि वह रोज़मर्रा के अपने अनुभवों और विचारों का लेखन करता है, तो उसे डायरी लिखना कहते हैं और यदि वह किसी स्थान की यात्रा करता है और उस यात्रा के बारे में लिखता है तो उसे यात्रा वृत्तांत कहा जाता है। वैयक्तिक लेखन में लेखक का अपना व्यक्तित्व समाहित होता है इसलिए इस तरह के लेखन में आत्मीयता और निजता का गुण समाहित होता है। प्रायः

इनमें वर्णनात्मकता और विवरणात्मकता की प्रधानता होती है, लेकिन विषय और भाव के अनुसार भाषा में भिन्नता का समावेश होता है। भाषा में रोचकता और सौंदर्यात्मकता का गुण उत्पन्न करना जरूरी हो जाता है।

वैयक्तिक लेखन की इन विधाओं की भाषागत विशेषताओं के सोदाहरण विवेचन द्वारा आपने अध्ययन किया है। आशा है इससे आपको वैयक्तिक लेखन को समझने में मदद मिली होगी।

बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) निर्वैयक्तिक लेखन वह होता है जो व्यक्ति निरपेक्ष होता है, जिसमें लिखने वाला अपने बारे में कुछ नहीं बताता।

2) ख) और घ)

3) किया जा सकता है, लेकिन उसी सीमा तक, जहाँ तक उसके तथ्यों को कोई नुकसान नहीं पहुँचता।

बोध प्रश्न-2

1) किसी अन्य व्यक्ति के जीवन की कथा जीवनी कहलाती है और स्वयं के जीवन की कथा कहना आत्मकथा कहलाती है।

2) यात्रा वृतांत प्रकृति के सौंदर्य, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, राजनीतिक संपर्क, ऐतिहासिक स्थलों का आकर्षण और शैक्षिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर लिखे जाते हैं।

3) डायरी में व्यक्ति अपने जीवन में घटी घटनाओं का अपने लिए लेखन करता है जबकि संस्मरण अतीत की घटनाओं को स्मृति के तौर पर लिखा जाता है।

बोध प्रश्न-3

1) क) √ ख) x ग) √ घ) √

2) वैयक्तिकता और निजता

3) भाषा में कलात्मकता और शैलीगत वैशिष्ट्य पर बल देने की आवश्यकता नहीं रहती।

अभ्यासों का उत्तर इकाई का अध्ययन कर स्वयं लिखिए।